दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 56 ❑ अंक-5 ❑ दिल्ली ❑ दिसम्बर, 2017 (प्रथम) ❑ मूल्य : 2 रु.

33वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

देश विदेश के प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 33वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 9–10 दिसम्बर, 2017 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में देश के अलावा नेपाल, भूटान, इंग्लैंड, अमेरिका, श्रीलंका, मारीशस आदि विदेशों के दलितोत्थान में जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवी भाग लेंगे और दलितोत्थान विषयों पर विचार विमर्श करेंगे।

इस अवसर पर दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दलित साहित्यकारों और समाजसेवियों को डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया जायेगा।

इस दलित साहित्यकार सम्मेलन में विभिन्न दलों के राजनेता भाग लेकर दलितों की दशा व दिशा पर अपने विचार व्यक्त करेंगे।

सम्मेलन के शुभावसर पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किये जाने वाले महानुभाव हैं–

डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड-2017

1. **श्री ओम प्रकाश वी.के. गहतराज**
   चेयरमैन
   इन्टरनेशनल दलित डवलपमेंट फोरम, नेपाल
2. **श्री जोय थट्टूकल**
   मैनेजिंग डायरेक्टर
   मट्टींडिया मेडिकल सेन्टर (चीफ आयुर्वेदा थेरापिस्ट्स), जर्मनी

डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड-2017

समाजसेवा–दलितोत्थान

1. **श्री संघप्रिय गौतम**
   पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री, लघु व मध्यम उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
2. **श्री यशपाल आर्य**
   परिवहन तथा समाज कल्याण मंत्री, उत्तराखण्ड
3. **डा. कृपाराम पुनिया**
   पूर्व उद्योग मंत्री, हरियाणा
4. **श्री ए.के. मणि, मजदूर नेता**
   पूर्व एम.एल.ए., केरल

दलित पत्रकारिता

1. **श्री आर.ए. दिवाकर**
   सम्पादक–कमेरी दुनिया, घाटमपुर (उ.प्र.)

दलित साहित्य सेवा

1. **डा. शैलेन्द्र पराशर**
   पूर्व डायरेक्टर, डा. अम्बेडकर पीठ विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
2. **डा. मनहंस कुमार 'नील'**
   लुमाला, तवांग, अरुणाचल प्रदेश
3. **श्री जागाराम शास्त्री**
   प्रदेशाध्यक्ष–भा.द.स. अकादमी, बिहार प्रदेश
4. **श्री सी.एम. पिपल**
   अध्यक्ष–भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली प्रदेश

सामाजिक न्याय

1. **श्रीमती श्यामा सुन्दरी**
   एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली

डा. अम्बेडकर विशिष्ट सेवा नेशनल अवार्ड-2017

1. **श्रीमती बिन्दू शाजी,**
   समाजसेविका
   चिरीयल परम्पू, चेरथला, अलप्पूज्हा (केरल)
2. **श्री के.एम. अनिल कुमार**
   समाजसेवक
   मनक्कडु, ईडुक्की (केरल)
3. **श्री अनिल पी.एन.,** समाजसेवक
   वेल्लाट्टांजूर, थ्रिस्सू (केरल)
4. **श्री सी.टी. बिजूमोन,**
   समाजसेवक
   वडनामकुरुशी, शोरानूर, पलक्कड (केरल)
5. **श्री जल्पेश भाई वघेला,**
   समाजसेवक
   परसाना नगर, राजकोट (गुजरात)
6. **डा. आर.के. ब्रजनन्दा सिंह**
   साहित्यकार
   लुवंग संघम मायी लेकाई, मन्तरीपुखरी, इम्फाल (मणिपुर)
7. **डा. नलिनी देवी, समाजसेविका**
   मन्तरीपुखरी, इम्फाल (मणिपुर)
8. **डा. पी.एस. सुगुनाकर राजू,**
   एम.बी.बी.एस., समाजसेवक
   जनगांव टाऊन (तेलंगाना)
9. **श्री माडूगुला लक्ष्मीनारायण,**
   डी.एम.ई., समाजसेवक
   सिद्धार्थ नगर, वारंगल (तेलंगाना)
10. **श्री वडलाकोंडा कुमारस्वामी**
    समाजसेवक
    कोथुरूजन्डा, हेनम्कोंडा, वारंगल (तेलंगाना)
11. **श्री गुर्रपू रविन्दर राव,**
    समाजसेवक
    गौतम नगर, हैदराबाद (तेलंगाना)
12. **डा. जी. वेणु एम.एस., सर्जन**
    असि. प्रोफेसर, उस्मानिया मेडिकल कालेज, हैदराबाद

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

अत्तो दीपो भवः

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के इस 33वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में पंचशील आश्रम, दिल्ली में पधारे देश–विदेश के प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत है। हम आशा करते हैं कि इस द्विदिवसीय सम्मेलन (9–10 दिसम्बर 2017) में आप पूर्ण विश्वास और अभिरुचि के साथ सहभागिता करेंगे और सम्मेलन के समापन के बाद नये जोश, नई उमंग के साथ दलितोत्थान का प्रण लेकर अपने–अपने प्रदेशों को लौटेंगे और बाबा साहब डा. अम्बेडकर एवं बाबू जगजीवन राम जी के समता के सपने को पूरा करने में जुट जायेंगे जिससे देश और समाज में भगवान बुद्ध की करुणा, शील, बन्धुता की सोच साकार हो सके।

भगवान बुद्ध के 'बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय' तथा 'अत्तो दीपो भव' के उद्बोधन को अपना आदर्श व आप्त वाक्य मानकर भारतीय दलित साहित्य अकादमी 1984 से देश में जन चेतना का कार्यक्रम लेकर आगे बढ़ रही है। गत 33 वर्षों में अकादमी का 'नेटवर्क' भारत के सभी राज्यों की सीमा लांघकर विदेशों तक फैल चुका है। दक्षिण भारत के राज्यों की अकादमी का जो सम्मेलन इसी वर्ष केरल के मुन्नार में हुआ उसमें सभी राज्यों की अलग– अलग भाषा होते हुए भी उनके सभी प्रतिनिधि ा निर्बाध गति से पारस्परिक भ्रातृभाव से इतने घुले–मिले नजर आ रहे थे जैसे वे सभी एक ही परिवार के हों। यही स्थिति पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की अकादमी की समिति की है। दक्षिण भारत के 7 राज्यों और पूर्वोत्तर भारत के 8 राज्यों में अकादमी की शाखाओं ने दलितों को एकजुट करके एक सशक्त कड़ी बनाई है जिससे दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग तो हुए ही हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए भी संघर्षरत हैं।

भारतय दलित साहित्य अकादमी ने गत 33 वर्षों में दलित साहित्य के माध्यम से देश में एक नई वैचारिक क्रान्ति पैदा की है। दलित एक दूसरे को जानने लगे हैं और अकादमी के मंच पर आकर एक–दूसरे की समस्या को पहचानने भी लगे हैं और उन समस्याओं के निवारण के लिए विचार–विमर्श करके उनका हल ढूंढने लगे हैं। अकादमी ने 'दलित साहित्य' को जन्म दिया, कॉलेज–विश्वविद्यालयों में स्थापित किया, दलित लेखकों को प्रोत्साहित किया और दलित साहित्यकार के रूप में उन्हें सम्मानित करके समाज में यथोचित सम्मान देकर मार्गदर्शन किया।

आज विश्वविद्यालय व कॉलेज के पुस्तकालय दलित साहित्य से भरे पड़े हैं, दलित साहित्य पाठ्यक्रम शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाया जा रहा है, उस पर शोध करवाकर पीएच.डी., डी.लिट्, एम.फिल की उपाधियों से शोधर्थियों को सम्मानित किया जा रहा है। प्रकाशक दलित साहित्य प्रकाशन के लिए दलित लेखक व साहित्यकारों को यथोचित मानदेय देकर दलित साहित्य लिखवा रहे हैं, देश में आज दलित साहित्य की तीव्र मांग है। यह सब भारतीय दलित साहित्य अकादमी के 33 सालों का प्रयास का फल है।

आज बुद्ध के सामने मनु को नकार दिया गया है। संत गुरु रविदास व सद्गुरु कबीर के सामने ब्राह्मणवाद नतमस्तक है। महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' के सामने मनुस्मृति की विषमता भरी वर्ण व्यवस्था चूर–चूर हुई नजर आ रही है। भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर तथा बाबू जगजीवन राम जी के समता का सन्देश ने सदियों से सोये हुए दलितों को झकझोर कर जगाकर खड़ा कर दिया है। वीरांगना झलकारीबाई और वीरांगना सावित्रीबाई फुले के पराक्रम, साहस व वीरता के सामने उच्च वर्णीय गोरी महिलायें पानी भरती नजर आती हैं। यह सब अकादमी की खोज का परिणाम है।

इसके पीछे भारतीय दलित साहित्य अकादमी का गत 33 सालों का परिश्रम, लगन, निष्ठा है जो अकादमी ने सदियों से मूक, अछूत, दलित, शोषित लोगों को मंच दिया, जुबान दी, विचार दिए, दिशा दी, कलम दी, लेखन के लिए प्रेरित किया, मान–सम्मान दिया और देश–विदेश में प्रख्यात किया। यह

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य—दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म—गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

हरि सा हीरा छाड़िके करे अन की आस

● डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविदास जी ने आज से 700 साल पहले यह दोहा अपने अनुयायियों के लिए कहा था—

हरि सा हरा छाड़िके
कर अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे
सत भाखै रविदास।।

यह दोहा भले ही उन्होंने मुस्लिम हुकूमत के दौरान अपने भक्तों और अनुयायियों को हिन्दू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपनाने से रोकने के लिए लिखा हो, पर इस दोहे की सार्थकता प्रत्येक काल में रही है भले ही उस समय किसी भी बादशाह या राजा—महाराजा की हुकूमत रही हो और वो लोभ—लालच या दबाव में अपना धर्म परिवर्तन करना चाह रहे हों।

श्री गुरु रविदास जी आध्यात्मिक शिखर पर पहुंचे महान संत थे और वह आत्मिक शुद्धि को सर्वोपरि मानते थे। तभी तो उन्होंने कहा था—''जिसका मन चंगा, उसकी खटोटी में गंगा।'' यानि जिसका मन पावन व शुद्ध है, उसे किसी गंगा—स्नान की जरूरत नहीं है।

मन की इसी शुद्धि के विषय में सद्‌गुरु कबीर ने भी कहा है—

कबीरा मन पावन भयो
जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरैं
कहत कबीर कबीर।।

संत गुरु रविदास जी ने सच ही कहा था कि जब तेरा मन पवित्र है, शुद्ध है तो यही तेरा मन मन्दिर है। इसलिए हरि (भगवान) को पाने की इच्छा के लिए तुझे इधर उधर भटकने की जरूरत नहीं। तेरा मन ही मन्दिर है और तेरा हरि उसमें विराजमान है।

गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति के सामने सैकड़ों राजा—महाराजा, महारानियां नतमस्तक होकर उनके शिष्य बन गये थे। चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्रवधु महारानी मीराबाई विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने ब्राह्मण—पोंगा पंडितों के लाख दबाव की परवाह नहीं करते हुए एक चमार जाति के संत को अपना गुरु धारण किया। गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति और भक्ति के सामने कांशी के पंडे—ब्राह्मणों को परास्त होकर दण्डवत होना पड़ा और अपने कन्धों पर उनकी पालकी उठाकर पूरे ब्राह्मणों के गढ़ काशी शहर में घुमाना पड़ा। गुरु रविदास जी की भक्ति भावना से तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोधी को भी प्रभावित होना पड़ा।

वाराणसी (उ.प.) गुरु रविदास जी की जन्म स्थली और कर्मस्थली है। यहीं पर चमार परिवार में उन्होंने जन्म लिया और अपना पुश्तैनी कार्य करते हुए अपनी आध्यात्मिक शक्ति को शिखर पर पहुंचाया। ब्राह्मणवाद के गढ़ काशी में उन्होंने खुले रूप से पाखंड, पूजा—पाठ, मूर्तिपूजा, तीर्थ, व्रत, पाप—पुण्य, गंगा स्नान आदि का खुलकर विरोध किया और जन्म के आधार पर ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को सीधी चुनौती दी। उन्होंने काशी नरेश के सामने शास्त्रार्थ में काशी के पण्डों को हराया और उन्हें दण्डवत होकर अपने पैरों पर झुककर नमस्कार करने को विवश कर उनके ब्राह्मणवाद की श्रेष्ठता को चकनाचूर किया। काशी के पण्डे हुए है और यही उनकी एकता, भाईचारा, पारस्परिक प्रेम उनकी प्रगति का आधार है। पंजाब के हर गांव में स्थित रविदास मन्दिर, रविदास—गुरुद्वारे, गुरुघर, रविदासी डेरे—रविदासी कौम के सम्पन्नता व भव्यता को दर्शाते हैं जिनके परिवार का कोई न कोई सदस्य विदेश में जाकर भी अपने कारोबार में लीन होते हुए भी अपने परिवार और गांव को नहीं भूलता और अपने गांव में गुरुघर स्थापित करने के लिए तन मन धन से सहयोग करता है, उन गुरु रविदासियों की यह भक्ति भावना बेमिसाल है। साहिब' में भी गुरु रविदास जी के 40 पद संकलित हैं जिनसे उनकी महानता और विद्वता का पता चलता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में सवेरे और शाम को गुरु रविदास जी की आरती गाई जाती है जो प्रत्येक 'रविदासी' के लिए गर्व की बात है।

गुरु रविदास जी के जन्म स्थान काशी में उनकी स्मृति में विशाल भव्य मन्दिर बनाया गया जहां चौबीसों घंटे नियमित जोत जलती है और उनकी वाणी का पाठ चलता है। इसी तरह जालंधर (पंजाब) के बलां में गुरु रविदास जी का दूसरा विशाल धर्मस्थान है जहां प्रत्येक वर्ष 11 जून को सन्त सरवणदास के जन्म दिन पर विशाल संगति होती है जिसमें देश—विदेश के गुरु रविदास जी के श्रद्धालु इकट्ठे होकर उनका स्मरण करते हैं। गुरु रविदास जी का तीसरा बड़ा मन्दिर कात्रज पुणे (महाराष्ट्र) में है जहां लाखों गुरुजी के अनुयायी प्रतिवर्ष दिसम्बर मास में इकट्ठे होकर गुरु जी का गुणगान करते हैं। प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को गुरु रविदास जी का जन्म दिन देश—विदेश में धूमधाम से मनाया जाता और जुलूस व झांकियां निकाली जाती हैं। रविदास जयंती पर सभा, जीते हैं। रविदासी समाज के कुछ लोग राधा स्वामी बन गये हैं, कुछ निरंकारी बन गये है। कुछ 'मजहबी' बन गये हैं। कुछ लोग बापू आशाराम के शिष्य बन गये, कुछ रामपाल महाराज के कुछ लोग डेरा सच्चा सौदा के गुरु गुरमीत राम रहीम के। अब इन तथाकथित स्वयंभू भगवान व गुरुओं की काली करतूतों का भंडाफोड़ हो चुका है। इन तीनों स्वयंभू भगवानों पर बलात्कारी बाबा होने का दोष लग चुका है और तीनों अब जेल की सीखंचों के पीछे अपनी अय्याशी की जगह जेल की अधसीखी रोटियां खाते हुए आंसू बहा रहे हैं। उपरोक्त तीनों के सैकड़ों आश्रम उजड़कर नष्ट हो चुके हैं और अब उनके अनुयायी अन्धभक्त अपने को लूटा—पीटा महसूस कर खून के आंसू बहा रहे हैं। इन अन्धभक्तों और धर्म के नाम लूटे लोगों में अधिक संख्या दलित समाज के लोगों की है जिन्हें ये बलात्कारी बाबा साक्षात् 'भगवान' दिखाई देते थे और उनके एक इशारे पर अपना धन—दौलत तो लुटाते ही थे, उसके लिए मरने—मारने को भी तैयार रहते थे।

अच्छा है, अब देर से सही, अपनी आंखें खोले, अपने मन, बुद्धि से सोचें। अपनी शक्ति को पहचानें और एसे स्वयंभू बलात्कारी बाबाओं की काली

संपादकीय का शेष.....अत्तो दीपो भव:

अकादमी का साकार परिणाम है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने ही 5 हजार साल पुरानी सिंधु घाटी की सभ्यता की खोज कर वहां स्थित भव्य, आलीशान सर्वोत्तम भवन कला के नमूने मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, धोलवीरा, पीली बंगा, काली बंगा शहरों की संस्कृति को उजागर किया। दलित साहित्य, दलित कला, दलित संस्कृति, दलित वीर–वीरांगना, दलित संत, महात्मा, महापुरुष का जो मान–सम्मान आज आर्य संस्कृति के लोग कर रहे हैं। वे भी यह मानने लगे हैं कि दलित (द्रविड़) ही इस देश के मूल निवासी थे जिन्हें धोखे और षड्यंत्रपूर्वक सिन्धु घाटी से दक्षिण भारत की ओर धकेल दिया गया। आर्यों के इस छल, कपट को दलित साहित्य ने ही उजागर कर द्रविड़ व उनकी भाषा तमिल, तेलगू, मलयालम व कन्नड़ को यथोचित सम्मान दिया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी अपना चहुंओर प्रचम फैलाते हुए अपना 33वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन देश की राजधानी दिल्ली में 9-10 दिसम्बर, 2017 को आयोजित कर रहा है। आप इसमें ससम्मान आइये, देश–विदेश से पधारे दलित प्रतिनिधियों से मेल–मुलाकात कीजिए और फिर अकादमी से जुड़कर भगवान बुद्ध, गुरु रविदास और बाबा साहब डा. अम्बेडकर के कारवां को और आगे बढ़ाने में हमारा सहयोग दीजिए। इसी कामना के साथ–'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' के उद्घोष के साथ जय भारत जय भीम।

— डा. सुमनाक्षर

आचार्य रजनीश (ओशो) का कहना है कि ''गुरु रविदास जी सन्तों के आकाश में ध्रुव तारे हैं जिनकी अलग ही चमक है। भारत की भूमि से ब्राह्मण–पंडितों ने भले ही भगवान बुद्ध और उनके बौद्ध धर्म को छिन्न भिन्न कर दिया हो, पर वो गुरु रविदास को नहीं मिटा सके। सैकड़ों साल से उनकी रोशनी आज भी कायम है।''

भारत के हर गांव में गुरु रविदास जी के अनुयायी आज भी मौजूद हैं और उनमें से बहुत से अपने को 'रविदासी' कहलाने और अपने नाम के साथ 'रविदासी' जोड़ने में गर्व महसूस करते हैं। उन्होंने उनके नाम का सतसंग व भजन करने के लिए 'रविदास मन्दिर' या 'रविदासी गुरुद्वारा' भी बना रखे हैं, जहां सवेरे–शाम उनकी वाणी गाकर उनकी स्तुति करते हैं। दुनिया के जिस भी देश में रोजी–रोटी व काम धन्धे के लिए 'रविदासी' गये, वहां उन्होंने अपने आराध्यदेव की स्मृति में 'रविदास गुरुद्वारे' स्थापित किये जो उनकी सम्पन्नता, भव्यता व पारस्परिक भ्रातृभाव का परिचायक है। प्रत्येक रविवार को, जब काम–धन्धे से अवकाश मिलता है, वे 'रविदास गुरुद्वारे' (गुरुघर) में इकट्ठे होकर अपने रविदासिया धर्म, अपने रविदासिया कौम तथा अपने परिवारों की प्रगति पर विचार विमर्श करते हैं और सब मिलकर लंगर (भोजन) छकते हैं। गुरु रविदास जी का नाम, उनकी वाणी और उनके गुरुघर (गुरुद्वारे) उनको एकजुट रखे ब्राह्मण जब उन्हें पालकी में बैठाकर अपने कन्धों पर ढो रहे थे तो समग्र रविदासी चमार समाज 'जय रविदास'–'जय रविदास' के नारे लगाकर पूरे शहर को गूंजा रहा था। लोग देखकर अचम्भित थे कि कैसे संत रविदास ने वर्ण व्यवस्था को तोड़कर उसके क्रम को उलटा दिया था। समाज का सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आज अपने कन्धों पर समाज में सबसे नीची चमार जाति के व्यक्ति को ढो रहे थे और उसका जय–जयकार कर रहे थे।

संत गुरु रविदास जी ने उस मध्यम काल में यातायात का समुचित व्यवस्था न होते हुए भी देश–विदेश का दौरा किया। पंजाब में वे गुरु नानक देव जी से मिले और उनके साथ तीन दिन तक ज्ञान–गोष्ठी की। गुरु नानक देव जी ने ही उन्हें सर्वप्रथम 'वाहे गुरु' सम्बोधित कर सम्मान किया और उनके सम्मान में महाभोज (लंगर) का आयोजन किया। कहा जाता है कि तभी से सभी गुरुद्वारों में 'लंगर' की प्रथा शुरू हुई। गुरु रविदास ने अपने संगी–साथियों के साथ जहां–जहां का भ्रमण किया वहां वहां उनकी याद में मंदिर, घाट, तालाब, कुण्ड उनके नाम से आज भी विराजमान हैं।

गुरु रविदास जी ने काफी संख्या में पद और साखिया लिखीं, पर रविदासी अशिक्षित समाज अपनी उस धरोहर को संजोकर रख नहीं सका। सिख धर्म के पावन ग्रंथ 'श्री गुरु ग्रन्थ सम्मेलन, संगोष्ठी आयोजित की जाती हैं और विद्वान लोग उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर अपने–अपने विचार रखते हैं। गुरु रविदास जी के जीवन दर्शन पर विश्वविद्यालयों में शोध कार्य चलता रहता है और अब तक सैकड़ों विद्वान उन पर 'पी.एच.डी.' व 'एम. फिल' की उपाधि ले चुके हैं। गुरु रविदास जी नाम में ही नहीं, अपने कार्य में भी साक्षात सूर्य (रवि) के समान है जिनकी वाणी का प्रकाश आज भी साधारण से साधारण जन को आलोकित कर रहा है।

गुरु रविदास जी जैसे महान गुरु हैं, वैसे ही उनका चर्मकार समाज पूर्ण लोकतान्त्रिक आत्मनिर्भर समाज है, जिसका बुद्धि बल ब्राह्मण के बुद्धिबल से भी ज्यादा है। इस विषय में लोकोक्ति भी है–''**निगुरा बामन ना भला, सगुरु भला चमार, देवतन से कुत्ता भला, नित उठ भोखे द्वार**।। गुरु रविदासी जी का रविदासी (चर्मकार) समाज बहुत व्यापक और बहुसंख्यक समाज है। आज देश में रविदासी समाज एकजुट हो जायें तो वह केन्द्र व प्रदेशों में अपनी बहुमत की सरकार बना सकती है। पर इतने महान गुरु की सन्तान होते हुए भी, अपना धर्म, संस्कृति, पहचान अलग रहते हुए भी वह झूठी शान व सम्मान के लिए अलग–अलग धर्मों व सम्प्रदायों में उनके तथाकथित गुरुओं से 'नाम' लेकर अपनी असली पहचान छिपाकर बुजदिली और अपमानजनक जीवन करतूतों को जानें, दलित समाज के पास जब भगवान बुद्ध के अलावा संत गुरु रविदास, सद्गुरु कबीर, सतनामी गुरु घासीदास जैसे महान गुरु हैं तो वे अब भटकना छोड़कर एकजुट हों और अपने बाहुबल और संख्या बल के आधार पर देश की सत्ता की चाबी अपने हाथ में लें और सुशासन से शासन चलाये। गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा था–

कोई किसी को राज ना देहि,
जो लेहि निज बल से लेहि।।

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :

हिमायती

बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9
मो. 9810278936,
फोन : 011-27421449

दलित साहित्य और उसकी पृष्ठभूमि

● डा. माता प्रसाद, पूर्व राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश

दलित साहित्य शोषित, अपमानित, पीड़ित समाज की स्थिति को बदलने का एक विकल्प है। भारतीय संविधान लागू होने के 20 वर्षों के बाद भी जब इनमें भी शिक्षा की जागरूकता से प्रभावित समाज की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया तो युवकों में असंतोष पैदा होने लगा। इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए महाराष्ट्र के कुछ युवकों ने अग्रणी भूमिका निभायी।

9 जुलाई, 1972 ई. को कुछ युवक एक जगह इकट्ठे होकर 'दलित पैंथर' नामक एक संस्था बनाई जिनमें नामदेव ढसाल, लक्ष्मण ढसाल, जी.बी. पंवार आदि थे। इस संस्था के लोगों ने अपने लेखन द्वारा समाज की विषमता के विरुद्ध चोट करना शुरू किया। 'दलित पैंथर' नाम रखने की प्रेरणा उन्हें 'ब्लैक पैंथर' से मिली।

सत्रहवीं सदी में अमरीका के गोरे लोग अपने फार्मों पर खेती कराने के लिए अफ्रीका के बहुत से काले लोगों को बंधक बनाकर लाकर खेती कराते थे। उन्हें अपमानित, पीड़ित करते थे। 19वीं सदी में जब गुलामी प्रथा खत्म हुई तब वहां के ब्लैक लोगों ने ब्लैक पैंथर संस्था बनाकर अपने अपमान और उत्पीड़न के विरुद्ध लेखन शुरू किया था। दलित पैंथर ने दलित की परिभाषा इस प्रकार की राजसत्ता, धर्म, सम्पत्ति और सार्वजनिक हैसियत के आधार पर होने वाली सभी नाइंसाफियों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध अनुसूचित जातियां, जनजातियां, छोटे किसान, घुमन्तू जातियां दलित मानी जायेंगी।

सन् 1975 ई. में महाराष्ट्र से ही कमलेश्वर जी के संपादन में 'सारिका' पत्रिका में मराठी दलित साहित्य पर विशेषांक निकाला गया।

इसी काल में औरंगाबाद से गंगाधर पानतावड़े ने 'अस्मिता दर्श' मासिक पत्रिका का सम्पादन शुरू किया। जिसमें राजा ढाले, बाबुराव बागुल, रामदेव ढसाल, दया पंवार, अर्जुन डांगले आदि सहयोगी बने। इन लोगों ने जो लेखन शुरू किया उसे 'दलित साहित्य' कहना शुरू किया। बाद में दलित पैंथर के लोग भी इससे जुड़ गये क्योंकि उनकी भावना का इसमें समावेश था।

दलित साहित्य लेखन दलितों के आत्मसम्मान का प्रतीक बन गया। यह लेखन स्वानुभूति और भुक्तभोगियों का यथार्थवादी साहित्य बन गया। यह साहित्य डा. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित हैं। इसने अपने को वर्ण, जाति, धर्म, लिंग, नस्ल से दूर रखा। पहले इन्होंने अपने भुक्तभोगी जीवन को आत्मकथाओं में लिखा फिर अन्य विधाओं में दलित साहित्य का सृजन किया।

महाराष्ट्र के दलित साहित्य का प्रभाव हिन्दी पर पड़ा। 80 के दशक में हिन्दी साहित्य लिखना आरम्भ हुआ। इस अवसर पर नवोदित दलित लेखकों, पत्रकारों व सम्पादकों ने परस्पर विचार–विमर्श किया कि सरकारी साहित्य अकादमी की तरह उनकी भी दलित साहित्य अकादमी होनी चाहिए जो दलित साहित्य व दलित लेखकों को प्रोत्साहित करे, उनका मार्गदर्शन करे और दलित साहित्य की सीमा और परिभाषा निर्धारित करे। इसी उद्देश्य को लेकर भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना का निश्चय किया गया। 8 अगस्त, 1984 को नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में देश के सैकड़ों दलित लेखक, पत्रकार व सम्पादक और समाजसेवियों का एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया और वहीं पर भारत के उप प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम ने विधिवत रूप से भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना की घोषणा की और इसके संचालन की बागडोर डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को बतौर संस्थापक अध्यक्ष के रूप में सौंप दी। बाबू जगजीवन राम जी ने अपने उद्‌बोधन में दलित साहित्य सृजन के अन्तर्गत अपना गौरवमयी दलित इतिहास को खोजने पर जोर दिया जो ऋग्वेद जैसे हिन्दू धर्मग्रंथों में झलकता है। बाबूजी के निर्देशनुसार भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य को स्थापित करके और दलित साहित्यकारों को सम्मानित करके दलित अस्मिता को आगे बढ़ाया है। आज दलित साहित्य प्रतिष्ठित साहित्य है और दलित साहित्यकार प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं जो गौरवान्वित होकर दलित साहित्य की अभिवृद्धि कर रहे हैं। डा. सुमनाक्षर के नेतृत्व में अकादमी का परचम देश से बाहर विदेशों तक लहलहा रहा है। अब तो इस क्षेत्र में अनेक नामी दलित साहित्यकार आ गये हैं। जिनमें सर्वश्री पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, बिहारीलाल हरित, डा. एन. सिंह, डा. जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिसराय, कंवल भारती, श्यौराज सिंब 'बेचैन', ओमप्रकाश बाल्मीकि, डा. सोहनपाल सुमनाक्षर, डा. कुसुम वियोगी, डा. धर्मवीर, ईश कुमार गंगनिया, डा. कुसुम मेघवाल, डा. हेमलता माहीश्वर, सुशीला टाकभवरे, रजनी तिलक, पारसनाथ, विपिन बिहारी, डी.आर. जाटव, तुलसीराम, एच.एल. दुसाध, डा. कालीचरण स्नेही, मूलचन्द सोनकर, जवाहरलाल कौल व्यग्र, सूर्यपाल चौहान, डा. रामचन्द्र, मलखान सिंह, पूरन सिंह आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

दलित साहित्य में हर एक विधाओं में पर्याप्त मात्रा में इस समय दलित साहित्य उपलब्ध है। दो दर्जन पत्रिकाएं दलित साहित्य संवर्धन में लगी हैं जिनमें प्रमुख हैं—अम्बेडकर इन इंडिया, आश्वस्त, बयान, दलित दस्तावेज, बोधिसत्व बाबा साहब, टुडे, दलित साहित्य वार्षिकी, युद्धरत आम आदमी, गरिमा भारती, तीसरा पक्ष, भीम पत्रिका, अपेक्षा, हम दलित, हिमायती आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

इस समय मराठी हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, पंजाबी, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, बंगला, और जनजातीय भाषाओं में दलित साहित्य की पर्याप्त रचनाएं हो रही हैं। इस समय कई विश्वविद्यालयों में अनेक छात्र दलित साहित्य पर शोध कर ग्रंथ लिख रहे हैं।

पहले जब दलित साहित्य का सृजन शुरू हुआ तो कुछ लोगों ने उसका विरोध पृथकतावादी साहित्य करके किया था किन्तु उस समय भी प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर, मैनेजर पाण्डेय, बृजबिहारी तिवारी, डा. रमणिका गुप्ता, राजेन्द्र यादव, मुद्रा राक्षस जैसे साहित्यकारों ने इसका समर्थन किया था। अब तो दलित साहित्य का विरोध कम हो गया है।

कुछ लोगों का विचार है कि दलित शब्द संवैधानिक नहीं है इसलिए उसे बन्द कर देना चाहिए और दलित साहित्य के स्थान पर अम्बेडकरवादी साहित्य या बहुजन साहित्य अथवा जाजीवक साहित्य नाम देना चाहिए। परन्तु दलित शब्द दबाये हुए अपमानित लोगों को पूर्व की स्थिति से उबारने को प्रेरित करता है। डा. पुरुषोत्तम अग्रवाल का कथन है कि हरिजन शब्द सवर्ण दृष्टिकोण को प्रकट करता है जिसमें पश्चाताप की भावना निहित है। दलित शब्द करुणा या पश्चाताप का नहीं बल्कि बेवजह दमन या अपमानित होने के स्वाभाविक रोष को व्यक्त करता है। इसलिए मराठी, हिन्दी, गुजराती तथा अन्य भाषाओं में दलित साहित्य का प्रयोग किया जाता है। •

पृष्ठ 1 का शेष....देश विदेश के प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत

डा. अम्बेडकर विशिष्ठ सेवा नेशनल अवार्ड–2017

13. **श्री सुरेश कुमार ई.**
नन्थेरिकल, बेलमोन, कोलम (केरल)
14. **श्रीमती निर्मला बाई, सोशल वर्कर**
बोवेन पल्ली, सिकन्दराबाद (तेलंगाना)
15. **श्री मोगीलीपल्ली श्रीनिवास**
सोशल वर्कर, न्यू बोईगुडा, सिकन्दराबाद (तेलंगाना)
16. **डा. चन्द्रकुमार शर्मा,**
सीनियर लेक्चरार, बेलना, पच्तार (नेपाल)
17. **श्री टी. राजा, सोशल वर्कर**
कोनेरीकुप्यम, तिरुपत्तुर (तमिलनाडु)
18. **श्री बोडा अन्यैह दीना**
म्युनिसिपल कौन्सीलर वारंगल (तेलंगाना)
19. **श्री दुरगम नरसैह, सोशल वर्कर**
मल्काजगीरी, हैदराबाद (तेलंगाना)
20. **सुश्री बी. रम्या, एक्ट्रैस**
संस्थापक–रम्या हृदयालयाम माधापुर, हैदराबाद (तेलंगाना)
21. **श्री ओ. बीरामनी सिंह,**
समाजसेवक नयाग्राम, लखमीपुर, कच्छार (आसाम)
22. **श्री विजय भूषण दास**
समाजसेवक पलकान, हैलाकांडी (आसाम)
23. **श्री मथिव टी.वी.**
प्रकाश, ईडुको (केरल)
24. **एडवोकेट रतन सिंह बांगर**
प्रधान–बार एसोसियेशन, नरवाना (हरियाणा)
25. **श्री मनोज कुमार पी.**
कवलाम नोर्थ, एल्लय्यी (केरल)
26. **श्री मनुशंकर प्रभु**
मन्ननम, कोट्टायम (केरल)

डा. अम्बेडकर एक्सीलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड–2017

1. **श्री एडवर्ड एन.**
बेथल, वयालपुरायीडम कोलम (केरल)
2. **श्री जफीस जे.**
थमारकुलम, एलप्पूज्हा (केरल)
3. **डा. रजीथ कुमार**
किज्हूविलम, थिरूवनन्तपुरम (केरल)
4. **ब्रादर वी.सी. राजू**
स्नेहा मन्दिरम, पडभुघम, ईडुक्की (केरल)
5. **श्री जयरामभाई वघेला**
समाजसेवक, आनन्द जिला (गुजरात)
6. **श्रीमती बिटला सुजाता**
बिटला नर्सिंगराव फाउन्डेशन अफजल गंज, हैदराबाद (तेलंगाना)
7. **श्रीमती के. शिवाकुमारी**
बाग अम्बेरेट, हैदराबाद, (तेलंगाना)
8. **श्रीमती इटीकला रेणुका**
तिलकनगर, न्यू नल्लाकुंटा हैदराबाद (तेलंगाना)
9. **श्री मरीपल्ली रमेश, समाजसेवक**
मुप्पाराम, धरमसागर, वारंगल (तेलंगाना)
10. **श्रीमती गौरा नेपाली**
चेयरपर्सन–सेन्टर फार दलित वुमेन, काठमांडू (नेपाल)
11. **श्री आर. गोपकुमार, सोशल वर्कर**
थलायिल, त्रिवेन्द्रम (केरल)
12. **डा. शिबू जयराज, सोशल वर्कर**
कोल्लड, कोट्टायम (केरल)
13. **श्री लालू मलायिल, सोशल वर्कर**
कोम्मडी, अलप्पूज्हा (केरल)
14. **श्रीमती रीना सजीवन,**
सोशल वर्कर, थिरूवमपाडी, अलप्थूज्हा (केरल)
15. **श्रीमती सिन्धु के.एस.**
सोशल वर्कर, सूरानाड नार्थ, कोलम (केरल)
16. **श्री टी.पी. सुकुमारन**
सोशल वर्कर, चेरूवाथूर, कसरगोड (केरल)
17. **श्रीमती स्वथन्थरा के.पी.**
सोशल वर्कर, कुम्बलेरी, वयानाड (केरल)
18. **श्री ए.वी. गोबिन्धन**
प्रो. पिपुल्स लाईट हाऊस, कोट्टी पय्यन्नूर (केरल)
19. **श्री पी. गणेशन, जनरल सेक्रेट्री**
आदिर्याक्कवे कराचीमुण्डी देवस्थानम, माबुंगल (केरल)
20. **श्रीमती कमला आगन्दा**
सोशल वर्कर, बागेश्वरी, काठमांडु (नेपाल)
21. **श्री पुरुश धकाल,**
आर्टिस्ट, म्युजिशियन, माननीय सदस्य–पब्लिक सर्विस कमीशन ललितपुर (नेपाल)
22. **श्रीमती अलूरानी**
सोशल वर्कर आनन्द नगर, रंगारेड्डी (तेलंगाना)
23. **डा. (प्रो.) लक्ष्मी प्रसाद राय**
जर्नालिस्ट, प्रेजिडेंट–वायस आफ नेपाल ह्यूमन राईट्स, पोखरा (नेपाल)
24. **श्री मौलप्पा अमरुतराव**
चौली, नौबाद, बीदर (कर्नाटक)
25. **श्री बीजीत बोराह**
सेन्सुआ, सिरसागावो (आसाम)
26. **श्रीमती वसुन्धरा मोहन**
जनरल सेक्रेट्री–श्रेयास फाउन्डेशन थिरूमलागीरी, सिकन्दराबाद (तेलंगाना)
27. **श्री जोस परास्सेरी**
नयारूपर्ड, ईडुकी (केरल)
28. **श्रीमती रमा देवी**
देवी निवास, कवलम, अल्लप्पुज्हा (केरल)
29. **श्री एस.एम. विजय कुमार**
समाज सेवक फाउन्डर–हेल्पिंग हेन्डस् ट्रस्ट नैडूपेटा, नैल्लोर (आंध्र प्रदेश)
30. **श्री पदम् विश्वकर्मा**
प्रेजीडेंट–इंटरनेशनल नेपरली लिट्रेरी सोसाइटी, यू.एस.ए.
31. **श्री अरेल्ली श्रीनिवासुलू (टीचर)**
समाज सेवक वारंगल (तेलंगाना)
32. **डा. बी. वशिष्ट**
असिस्टेंट, प्रोफेसर ग्रुप केप्टन–नेचर विंग, नामपल्ली, हैदराबाद (तेलंगाना)
33. **श्री संजीव कुमार, आई.एफ.एस.**
क्षेत्रीय मुख्य वन संरक्षक हजारीबाग (झारखंड)
34. **श्री जोसे थोमस**
समाज सेवक नेडुमकन्डम, ईडुकी (केरल)
35. **श्री बी. मनी मंजारी**
समाज सेवक मेडीवाबी, सिकन्दराबाद (तेलंगाना)
36. **श्री शेख बसीर, बी.ए.**
डायरेक्टर–ए.आर.डी. डी.नं. 15/286, नजदीक महालक्ष्मी मन्दिर, वलायानन्दरपुरम, गुडूर जिला–नैलोर (आंध्र प्रदेश)

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड–2017

1. **डा. द्विपेन्द्र कुमार नाथ**
एम.ए., बीएड्, एल.टी., पीएचडी पतरकुची, बिसीस्ठ, गुवाहटी (आसाम)
2. **डा. वेदपाल भाटिया,**
असिस्टेंट प्रोफेसर पेओंट, निस्सींग, करनाल (हरि.)
3. **डा. जगदीश कुलदीप**
चकरभाटा कैम्प, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
4. **श्री धर्मपाल बौद्ध**
नवान, राजगृह, जिला–चुरू (राजस्थान)

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. डी. एल. (एन.) 07/0090/15–17
प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर, 2017

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड–2017

5. **डा. आर.सी.पी. सिसोदिया**
राजीव गांधी नगर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
6. **प्रो. सी.ओ. समुएल**
अंचल, कोलम (केरल)
7. **श्री जी. विश्वम्भरन नैर**
राजसूयम, कुलचूर, थिरूवनन्तपुरम (केरल)
8. **डा. जोगेंद्र नाथ, एम.ए., पीएचडी**
महानगर, बसिस्ठ, गुवाहटी (आसाम)
9. **श्रीमती नला माधवी**
तेलगु पंडित, विद्यारण्य पुरी, हनुमान नगर, वारंगल (तेलंगाना)
10. **श्रीमती शीला रजन नादुवाथ तेजस**
मलाप्पुरम (केरल)
11. **श्री जगथी पी.**
कुलीरमा, पलक्कड (केरल)
12. **श्री सेवाराम खांडेगर**
प्रेजिडेंट–श्री गुरू रविदास प्रान्तीय महासभा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
13. **श्री रेजी थोमस**
मंजूर साऊथ, कोट्टायम (केरल)
14. **श्री प्रभाकरन सी.वी.**
अलुक्कोल, मरियाड, मलप्पुरम (केरल)
15. **श्रीमती सीजीथा अनिल**
अजोहदीमक्कल, कोट्टायम (केरल)
16. **श्री रवीन्द्रन केच्चेरी**
पुथूर, पल्लीकल, मलपुरम (केरल)
17. **डा. जी. प्रवीना बाई**
एसीस्टेंट प्रोफेसर, हेड–हिन्दी विभाग, तेलंगाना यूनीवर्सिटी, निजामाबाद (तेलंगाना)
18. **श्री भूमिधर दास**
बोरागांव, गरचूक, गुवाहटी (आसाम)
19. **श्रीमती बीनापानी चौधरी**
बोरागांव, गरचूक, गुवाहटी (आसाम)

डा. अम्बेडकर कलाश्री नेशनल अवार्ड–2017

1. **श्री श्रीजी इरेझा**
इरेझा नार्थ, एलप्पूज्हा (केरल)
2. **श्री द्रवेश्वर राम उर्फ रमण आजाद गायक / टी.वी. आर्टिस्ट**
गोरीगमा, महुआ, जिला–वैशाली (बिहार)
3. **सुश्री सीता मिजार**
नेत्री–नेपाल कांग्रेस, नुवाकोट (नेपाल)
4. **श्रीमती भाभा सुकुमारन, आर्टिस्ट**
ऊरक्करी, अलप्पुज्हा (केरल)
5. **श्रीमती सुभाषकुमार पी.,**
आर्टिस्ट, थोडायम, शोरनपुर, पलक्कड (केरल)
6. **श्री बीजू एम.टी., कलाकार**
इरनावे, कन्नूर (केरल)
7. **श्री सुभाषनाथ, कलाकार**
सिपाझर दरांग (आसाम)
8. **श्री दीपांकर देव बराल**, कलाकार
धुबरी (आसाम)
9. **श्री एम. रामाकृष्णन, कलाकार**
थिरीस्सूर (केरल)
10. **श्री मनीयन, कलाकार**
कुटट्–कलवेल, अलप्पूज्हा (केरल)
11. **श्री के.के. विजयन, कलाकार**
लरक्कल, एर्नाकुलम (केरल)
12. **श्री साबू एरकुज्हा, आर्टिस्ट**
कोथामंगलम, एर्नाकुलम (केरल)

डा. अम्बेडकर सेवाश्री नेशनल अवार्ड–2017

1. **कु. तलिका जे. वघेला**
समाजसेविका
जिला–आनन्द (गुजरात)
2. **डा. जयप्रकाश यादव,**
एम.बी.बी.एस.
खेडालीगंज, अटरू, जिला–बारां (राजस्थान)
3. **कु. आर्या बी. करम पट्टू**
शान्ति थिवम, वट्टाकला, कोलम जिला (केरल)
4. **श्री बीरू रंजन नाथ**
दुध पटील, सिल्चर, जिला–कछार (आसाम)
5. **श्री लालचन्द भोला**
मौ. संगवाना, बठिंडा (पंजाब)
6. **श्री जरनेल सिंह रंगा**
पत्रकार
कुरूक्षेत्र (हरियाणा)
7. **श्री निरूपम नाथ**
कटिगोरा, कच्छार (आसाम)
8. **श्री रघुनाथ सिंह**
बेहरा बाजार, कटिगोरा, कच्छार (आसाम)
9. **मो. मंजूरूल हक**
बेहरा, कटिगोरा, जिला–कच्छार (आसाम)
10. **श्री एजी बबाचन, सोशल वर्कर**
चरथला, अलप्पूज्हा (केरल)
11. **श्री के.के. हम्झा कुट्टी**
सोशल वर्कर, चवक्कड, थ्रीसूर (केरल)
12. **श्री जोयनल अबेडीन लस्कर**
सोशल वर्कर, ऊजन तारापुर, कच्छार (आसाम)
13. **श्री शिवराज केममनी**
लिंगसुगुर, रायचूर (कर्नाटक)
14. **डा. देवप्पा एच. कडाडली, पेडीट्रीसियन**
श्री रघुवन्द्रा हॉस्पीटल, लिंगसुगुर रायचूर (कर्नाटक)
15. **श्री शिवलिंग मेगलमनी,**
समाजसेवक
कौन्सीलर–टाऊन म्युनिसिपल कोन्सिल, लिंगासुगुर, रायचूर (कर्नाटक)
16. **डा. प्रिया एस.वाई.,**
मेडीकल डायरेक्टर
डी.पी.एम.एस. होस्पीटल, कराकुलम, त्रिवेन्द्रम (केरल)
17. **श्री जोहन्सन जोसेफ**
कडवन्थरा, कोचीन (केरल)
18. **श्री शेख चान्द शेख नबी (सरपंच)**
इनयात पुरा, वाघोटा, जलगांव (महाराष्ट्र)
19. **श्री सी. सुन्दर राजन**
नं. 131, न्यू माडल हाऊस, कोरामण्डल (कर्नाटक)

वीरांगना सावित्रीबाई फुले नेशनल अवार्ड–2017

1. **श्रीमती दीपिका बे. कथारनाथ (आशा) समाजसेविका**
गोपाल नगर, वसिष्ठ, गुवाहटी (आसाम)
2. **श्रीमती भावना बेन जे. वाघेला**
समाजसेविका
परसना नगर, राजकोट (गुजरात)
3. **श्रीमती राखी एस. शर्मा**
समाजसेविका
जिला–वडोडरा (गुजरात)

भगवान बुद्ध नेशनल अवार्ड–2017

1. **श्री जयराम कलीराज**
ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट
काठमांडू (नेपाल)
2. **श्री दिनेश टी. शर्मा**
समाजसेवक
वडोडरा (गुजरात)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

33वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

द्विदिवसीय कार्यक्रम

स्थान : पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव,
(बुराड़ी बाई पास) रिंग रोड, दिल्ली-84

शनिवार, दिनांक 9 दिसम्बर, 2017

प्रातः 8 बजे	प्रतिनिधि पंजीकरण
प्रातः 10 बजे	प्रतिनिधियों का स्वागत
दोपहर 12 बजे	स्वागत भाषण, अतिथियों का स्वागत
दोपहर 1 बजे	डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण
दोपहर 2 बजे	मुख्य अतिथि का भाषण
दोपहर 3 बजे	मध्यान्तर जलपान
सायं 4 बजे	डा. अम्बेडकर फैलोशिप वितरण
सायं 6 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्थान : पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव,
(बुराड़ी बाई पास) रिंग रोड, दिल्ली.110084

रविवार, दिनांक 10 दिसम्बर, 2017

प्रातः 10 बजे	प्रतिनिधियों का पारस्परिक परिचय
प्रातः 11 बजे	उद्घाटन : दलित धर्म संसद सम्मेलन दलित इतिहास सम्मेलन दलित पत्रकार सम्मेलन दलित जन समस्याएं सम्मेलन दलित महिला सम्मेलन
दोपहर 12 बजे	सम्मेलन में प्राप्त शोध पत्र/ सुझाव/प्रस्तावों का विश्लेषण व निष्कर्ष
दोपहर 2 बजे	मध्यान्तर भोजन
दोपहर 3 बजे	प्रस्तुत प्रस्तावों पर सम्मेलन की राय
सायं 6 बजे	समापन समारोह

नोट : (1) दिल्ली में मौसम ठंडा है। अतः अपने साथ गर्म कपड़े व ओढ़ने के लिए कम्बल आदि साथ लेकर आएं। (2) सभी प्रतिनिधियों के आवास की व्यवस्था सामूहिक है। जो प्रतिनिधि सपरिवार पृथक रहना चाहते हैं, वे कहीं भी अपने ठहरने की व्यवस्था कर सकते हैं। (3) आपके साथ आने वाले प्रत्येक प्रतिनिधि को साधारण प्रतिनिधि शुल्क 200/- रु. जमा करना अनिवार्य है, तभी वे आवास व भोजन की सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। (4) पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव (बुराड़ी) दिल्ली-84 आऊटर रिंग रोड, बुराड़ी बाईपास के पास है। जहां आप किंग्जवे कैम्प दिल्ली से डीटीसी बस रूट नं. 61 व अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डा, कश्मीरी गेट, दिल्ली से डीटीसी रूट नं. 192 से पहुंच सकते हैं। किंग्जवे कैंप (जी.टी.बी. नगर) व माडल टाउन तक मेट्रो रेल आती है।

संपर्क करें : मो. 9818278936, 9891989175

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की ओर से देश विदेश से आये प्रतिनिधियों का हार्दिक अभिनन्दन

समझो त्योहार है

गरीब, गरीबी से हारा है।
रुखी सूखी बासी खाते।
अगर कभी मिल जाओ मिर्च प्याज।
तो समझो त्योहार है।
ज्वार के मोटे मोटे रोठ पर।
कभी इतिफाकन मिल जाओ।
मीठी मीठी गुड़ की डली।
तो समझो त्योहार है।
फटे पैबंद लगे हुए कपड़े।
कहीं चाहे रगे उड़े से
कहीं से मिल जाये साबूत कपड़ा।
तो समझो त्योहार है।
फटी साड़ी तन पर लपेटे।
भूख बेहाल पेट दबा ले।
मुस्कुरा दे उसका लाल कहीं।
तो समझे त्योहार है।
गरीब के बच्चे की दिवाली।
कहां उसके पटाखे सांप गोली।
जले पटाखों के कचरे में अगर।
मिल जाये साबूत पटाखा।
तो समझो त्योहार है।

— मुसाफिर देहलवी

3. प्रो. संजय मोरे, सोशल वर्कर
   गणेश कालोनी, भुसावल (जलगांव) महाराष्ट्र

बाबू परमानन्द मेमोरियल नेशनल अवार्ड-2017

श्री भूषण लाल डोगरा
वाईस चेयरमैन—
जे. एंड के. गवर्नमेंट एडवाईजरी बोर्ड फार दी वेल्फेयर आफ शड्यूल्ड कास्ट
जम्मू (जम्मू कश्मीर)

श्री राकेश सोनी मेमोरियल गुरू घासीदास नेशनल अवार्ड-2017

प्रो. (डा.) काली चरण 'स्नेही'
प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, लखनऊ यूनिवर्सिटी
लखनऊ (उ.प्र.)

वीर एकलव्य नेशनल अवार्ड-2017

श्री वी.एम. विजयन
मार्शल आर्ट टीचर
गुरुक्कल, कोझीकाडा (केरल)

महात्मा जोतिबा फुले नेशनल अवार्ड-2017

1. डॉ. मिलिन्द बिम्बे, प्रिंसिपल
   स्वामी समर्थ महिला कालेज, रावेर, जलगांव (महाराष्ट्र)
2. डा. श्रीनिवास, सी.ए.एम.ओ.
   कोयला नगर होस्पीटल,
   बी.सी.सी.एल. धनबाद (झारखंड)

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।